दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-IX (प्रश्नपत्र-1)

DTVF/18(JS)-HL-**HL9**

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Ravi Kumar Sihag

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]: 1 1 3 9 4 7 9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained):

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) नाथ साहित्य में खड़ी बोली हिंदी का प्रारंभिक स्वरूप

सिद्धों के प्रवृत्ति मार्ग से क्षुब्ध होकर गोरखनाथ द्वारा नाथ पंथ की स्थापना की गई। नाथों ने अपने सांप्रदायिक रीति-रिवाजों एवं मान्यताओं के प्रकाशन के लिये जो साहित्य रचा, उसे नाथ साहित्य कहते हैं।

यूँ तो खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप सिद्ध साहित्य में भी दिखाई पड़ते हैं पर नाथ साहित्य में इसकी तीव्रता कुछ घनीभूत हो गई। यह भी ध्यान रहे कि खड़ी बोली का स्वरूप यहाँ केवल शब्दों के स्तर पर ही दिखाई पड़ता है, व्याकरणिक स्तर पर नहीं। चर्पटीनाथ की यह उक्ति द्रष्टव्य है-

"जाणि के अजाणि होय बात तूँ ले पहाणि,
चेले हो हुआ लाभ होइगा, गुरु होइयो आणि।"

प्रस्तुत उदाहरण में 'न' का 'ण' में रूपान्तरण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'ट' वर्ग प्रधान भाषा एवं 'गुरु', 'चेला' जैसे शब्द खड़ी बोली का आभास देते हैं।

एक अन्य सूक्ति है जिसमें खड़ी बोली का स्वरूप आधुनिक काल के समक्ष दिखाई पड़ता है -

"नौ लख पातरि आगे नाचै, पीछै सहज अखाड़ा।
ऐसो मन लै जोगी खेलै, तब अंतरि बसै भंडारा"
(गोरखनाथ)

इस उक्ति में तो संख्यावाची पद (नौ, लख) 'ण' की बहुलता एवं अंतिम पंक्ति (तब अंतरि बसै भंडारा आदि उदाहरण खड़ी बोली का आभास प्रदान करते हैं।

इस प्रकार पूर्णतः तो नहीं परन्तु आरंभिक विकास (शब्दावली, क्रियारूप) की दृष्टि से नाथ साहित्य का योगदान अप्रतिम है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में डा. रघुवीर का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण में हिन्दी की पुनरुत्थानवादी संप्रदाय से संबंधित- डॉ० रघुवीर का योगदान सर्वोच्च है। अपनी अटूट परिश्रम, दृढ़ निश्चयता से इन्होंने अकेले ही चार लाख से अधिक शब्दों का निर्माण कर दिया। शब्द चाहे विज्ञान के हो या, गणित के; जीवविज्ञान के हो या समाजशास्त्र के, मुद्रशास्त्र के हो या अर्थशास्त्र है - हर विषय के शब्दों में डॉ० रघुवीर का योगदान असंदिग्ध है।-

(क) इन्होंने शब्दावली निर्माण हेतु संस्कृत को प्रमुख आधार बनाया क्योंकि इनका मानना था कि संस्कृत भाषा से ही अन्य भारतीय भाषाओं का जन्म हुआ है।

(ख) इनके अनुसार शब्द सारगर्भित व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अन्यतम होना चाहिये। शब्दों के अर्थ में भिन्नता नहीं होनी चाहिये।

(ग) शब्द संक्षिप्तता पर उन्होंने विशेष ध्यान दिया – उदाहरणार्थ 'सिग्नल' के लिये 'लौहपतगामिनी सूचक यंत्र' के बजाय 'संकेतक' शब्द का प्रयोग।

(घ) इनके अनुसार शब्द ऐसा होना चाहिये जो उस शब्द से उत्पन्न अन्य शब्दों के अर्थ को भी व्यक्त कर सके। उदाहरण के लिये 'इलेक्शन' का शब्द 'चुनाव' के बजाय 'निर्वाचन' लेने से इससे जुड़े अन्य शब्दों का निर्माण – निर्वाचित, निर्वाचक मंडल भी इसी शब्द से हो जाता है।

(ङ) शब्दों के विभिन्न रूपों हेतु संस्कृत के उपसर्ग, प्रत्ययों का प्रयोग भी इन्होंने किया है।

उपर्युक्त कार्यों के द्वारा डॉ० रघुवीर शब्दावली निर्माण में शिखर पुरुष कहे जा सकते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा और राजभाषा में अंतर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रभाषा किसी देश की वह भाषा होती है जो पूरे देश में बोली व समझी जाती है, जिसका प्रयोग सांस्कृतिक व सामाजिक कार्यों के निर्वहन हेतु किया जाता है जबकि राजभाषा से तात्पर्य किसी देश के प्रशासन, अधिकारी वर्ग एवं कार्यालयी प्रयोग की भाषा से है।

राष्ट्रभाषा	राजभाषा
1) शब्दों का निश्चित, परिभाषिक एवं अद्वितीय अर्थ होना आवश्यक नहीं होता।	1) शब्दों के अन्य परिभाषिक, निश्चित एवं अर्थ वस्तुनिष्ठ होते हैं।
2) यह मेलों, उत्सवों, सांस्कृतिक पर्वों की भाषा है।	2) इसका प्रयोग केवल कार्यालय व प्रशासनिक कार्यों में होता है।
3) आत्मनिष्ठता की प्रवृत्ति	वस्तुनिष्ठता विद्यमान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

काव्यभाषा के रूप में इसी का प्रयोग किया जाता है।	इसका प्रयोग काव्य-भाषा के रूप में नहीं किया जा सकता।
यह भाषा उस क्षेत्र, राज्य या देश की स्थानीय भाषा ही हो सकती है- जैसे पाकिस्तान में उर्दू, जर्मनी में जर्मन।	यह भाषा बाहरी भी हो सकती है जैसे- इस्लाम के आगमन पर फारसी तो अंग्रेजी (अंग्रेजों के समय) का भारत में राजभाषा का बनना
इसका विकास धीरे-धीरे होता है उदा० हिन्दी का विकास हजार वर्षों में हुआ है।	इसे एक झटके में एक शासनादेश द्वारा ही स्थापित किया जा सकता है
	मुगलकाल में एकझटके में 'फारसी' का राजभाषा बनना।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) 'अवधी' बोली

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अवधी बोली का उद्भव उत्तरप्रदेश के लखनऊ, बहराइच, अयोध्या, सुल्तानपुर जैसे क्षेत्रों में हुआ है। इस बोली का विकास प्राचीन महाजनपदयुगीन कोसल जनपद में विद्यमान कोसली बोली से हुआ है। इस बोली से यह अर्द्धमागधी अपभ्रंश के रास्ते ~~पश्चिमी~~ पूर्वी हिन्दी उपभाषा के एक बोली के रूप में स्थापित हुई।

अवधी बोली के साहित्य पर विचार करें तो प्रारम्भिक सिद्ध नाथ, जैन काव्यों से लेकर रोडा कृत राउरवेल तथा अमीर खुसरो की 'खलिकबारी' का नाम उल्लेखनीय है।

परन्तु मध्यकाल में सूफी संतों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में मलिक मोहम्मद जायसी ने अपने काव्यों (जैसे पद्मावत) के माध्यम से तो आगे चलकर रामभक्त कवि तुलसीदास ने अपने महाकाव्य 'रामचरितमानस' के द्वारा अवधी को प्रतिष्ठित, विकसित रूप प्रदान किया।

उदा० "यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाय
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाँव"
(जायसी)

"लोचनु जल रह लोचन कोना,
जैसे परम कृपन कर सोना"
(तुलसी)

बोली की विशेषताएँ
- उकरांत बहुला बोली - रामु, किसानु
- संज्ञा के तीन रूप - लरका, लरकवा, लरकउना
- संध्यक्षरों का प्रयोग - पइल, चउड़ा
- क्रिया रूप - वर्तमान - त रूप - चलत
  भूतकाल - ल रूप चलल
  भविष्य - ब रूप चलब
  आदि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) भाषा और बोली में अंतर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाषा एवं बोली के अंतरों पर विचार करें तो इनमें विभेद करना कठिन है क्योंकि अनेक भाषाशास्त्री इन दोनों में अंतर की व्याख्या समाजशास्त्रीय दृष्टि से करते हैं। सरल रूप में भाषा बोली का मानक, विकसित एवं परिनिष्ठित रूप होता है जिसका क्षेत्र बोली के क्षेत्र से व्यापक हो जाता है जैसे - हिन्दी भाषा व खड़ी बोली।

अन्य स्तरों पर अंतर

(क) बोधगम्यता :- भाषा की समझ इसके प्रभाव क्षेत्र में आने वाले समस्त प्रयोगकर्त्ताओं तक होती है जबकि एक भाषा क्षेत्र की दो बोलियों में भी पर्याप्त भिन्नता हो सकती है जैसे - खड़ी बोली एवं ब्रज भाषा

(ख) भौगोलिक विस्तार :- भाषा का विस्तार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अधिक होता है परन्तु खड़ी बोली का कम।

(ग) व्याकरणिक स्वरूप :- भाषा में मानक व्याकरण होता है जबकि बोली केवल मौखिक ही होती है जहाँ स्थानानुरूप भिन्नता मौजूद होती है
'चार कोस पर बदले पानी, आठ कोस पर बानी।'

(घ) लिपि :- भाषा की एक निश्चित लिपि होती है जैसे हिन्दी की देवनागरी परन्तु बोली की कोई लिपि होना आवश्यक नहीं।

(ङ) प्रयोग क्षेत्र :- भाषा का प्रयोग साहित्य, कला, विज्ञान, पत्राचार जैसे क्षेत्रों में होता है जबकि बोली केवल सामाजिक कार्यों में ही प्रयुक्त होती है।

(च) विकास एवं राजकीय संरक्षण :- भाषा बोली का विकसित रूप होता है एवं इसे राजकीय संरक्षण भी प्राप्त होता है परन्तु बोली के साथ ऐसा नहीं है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सिद्ध, नाथों की रचनाओं से चलकर अमीर खुसरो की रचनाओं में आकर ब्रज भाषा का प्राचीन स्वरूप दिखाई देने लगता है। ब्रजभाषा का चरम विकास मध्यकालीन भक्तिकाल एवं उत्तरमध्यकालीन रीतिकाल में ही दिखाई देता है। इस युग में सूरदास, बिहारी, घनानंद ने इस भाषा के विकास में सबसे प्रमुख योगदान दिया।

कृष्णभक्त सूर ने अपने पदों के द्वारा ब्रजभाषा को एक-झटके में लोकभाषा से काव्यभाषा के रूप में स्थापित कर दिया। शुक्ल जी ने इसकी प्रशंसा में कहा भी है -

"चलती हुई ब्रजभाषा में सबसे पहली साहित्यिक कृति इन्हीं की मिलती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है जो अपनी पूर्णता के कारण आश्चर्य में डाल देती है।"

सूर ने अपनी ब्रज में पूर्वी हिन्दी (गौड़-आपन, हमार) के शब्दों के साथ-साथ अवधी के शब्दों (पुहुमी) व पंजाबी के शब्दों (प्यारी) का सुंदर मेल कर, इस भाषा को अद्भुत लयात्मकता, तन्मयता से संपृक्त कर प्रेम, श्रृंगार, वात्सल्य के जो चित्र खींचे हैं वे अद्भुत है-

"सोभित कर नवनीत लिये,
घुटरनु चलत रेनु तन मंडित
मुख दधि लेप किये।"

इसी प्रकार सूर ने अनुभाव व वियोग पक्ष को सीमित रखते हुए वर्णन शैली की नवीनता के द्वारा ब्रज भाषा में नये-नये प्रयोग कर इसके विकास में योगदान दिया। एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"निरखत अंक स्याम - सुंदर के
बार - बार लावति छाती
लोचन जल कागद मसि मिलि कै
हो गई स्याम- स्याम की पाती।"

सूर के साथ -साथ अष्टछाप के अन्य कवियों जैसे नंददास, परमानंददास ने भी ब्रज भाषा को संस्कृत के शब्दों से संपृक्त कर उसकी सामासिक क्षमता में विस्तार किया। जैसे -

"जो उनके गुन नाहिं, और गुन भये कहाँ ते
बीज बिना तरु जमै मोहिं
और तुम कहौ कहाँ ते।"
(नंददास)

ब्रजभाषा का वास्तविक विकास रीतिकाल में हुआ। दरबारी महौल, श्रृंगारपूर्ण कविताओं एवं भक्ति के कारण मनोरंजन की चाहत रखते जनसामान्य के हृदय को ब्रजभाषा ने ही अपनी सामासिकता, चंचलता, तन्मयता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

संगीतात्मकता से युक्त कविताओं ने भरने का काम किया।

इस समय बिहारी ने अपनी समास क्षमता व भाषा की समास क्षमता से ब्रज-भाषा को नवीन ऊँचाई प्रदान की। एक उदाहरण है-

"कहत नटत रीझत खीजत मिलत खिलत लजियात
भरे भौन में करत है, नैननु ही सौं बात।"

इसी प्रकार घनानंद ने अपनी आंतरिक संवेदनाओं को भी इसी भाषा में व्यक्त किया है-

"अति सूधो सनेह को मारग है
जहँ नेकु सयानप बाँक नाहिं।"

इस प्रकार पद्यलाल ब्रजभाषा के चरम विकास का साक्षी है। भाषा की व्यापकता राष्ट्रीय स्तर पर देखी जाने लगी। बिहारी दास को कहना पड़ा-

"~~ब्रजवास~~ ब्रजभाषा हेतु ब्रजवास ही न अनुमानो
ऐसे ऐसे कवि की बोली है सो जानिये।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सर्वनाम का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए सर्वनाम के विभिन्न भेदों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सर्वनाम से तात्पर्य उन शब्दों से है जो संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग किये जाते हैं। उदाहरण के लिये यदि एक वाक्य ऐसे लिखा जाये -

'राम ने कहा कि आज राम, राम के भाई के घर जायेगा'

इस प्रकार अर्थ के अटपटेपन से बचने एवं संज्ञाशब्दों के दोहराव से बचने हेतु सर्वनामों का प्रयोग काम्य हो जाता है।

हिन्दी के प्रमुख सर्वनाम निम्न हैं

(क) पुरुषवाचक सर्वनाम :- इस भेद में तीन प्रकार के पुरुष आते हैं

पुरुष	एकवचन	द्विवचन
उत्तम	मैं	हम
मध्यम	तू	तुम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

अन्य वह वे

परन्तु -
- पूर्वी हिन्दी की भाषा में उत्तम पुरुष एकवचन में 'हम' व बहुवचन में 'हमलोग' का प्रयोग किया जाता है।
- आदरणीय व्यक्तियों के लिये 'तुम' के स्थान पर एकवचन में भी 'आप' का प्रयोग किया जाता है।
- कई वाक्यों में 'तू' का प्रयोग निंदनीय माना जाता है अतः कई स्थानों पर एकवचन में तुम व बहुवचन में 'तुम लोग' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

(ख) निश्चयवाचक सर्वनाम :- वे सर्वनाम जो संज्ञा शब्दों की निश्चयात्मकता का बोध कराते हैं उदा० -
जो किताब मांगी थी, वही दो।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम :- ये संज्ञा शब्दों की अनिश्चयात्मकता का बोध कराते हैं। उदा० - कौनसी किताब चाहिये ?

(घ) प्रश्न वाचक सर्वनाम :- वाक्य में प्रश्न का बोध कराने वाले सर्वनाम प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं उदा०
तुम्हारा नाम क्या है ?

(ङ) संबंधवाचक सर्वनाम :- जो सर्वनाम दो संज्ञाशब्दों में संबंध का बोध कराते हैं। - उदा०
'जो पढ़ेगा, वह सफल होगा।'

(च) निजवाचक :- ऐसे सर्वनाम उत्तम या अन्य पुरुष सर्वनामों के संबंधों में निजता का बोध कराते हैं - उदा०
'यह मेरी अपनी किताब है'
इस प्रकार हिंदी में सर्वनाम व्यवस्था अत्यन्त तार्किक व वैज्ञानिक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मध्यकालीन आर्यभाषाओं की तीसरी कड़ी का प्रतिनिधित्व करने वाली अपभ्रंश भाषा अपनी कई विशेषताओं में अपनी पूर्ववर्ती भाषाओं से अलग हो जाती है। ये विशेषताएँ ध्वनियों के स्तर पर भी है और व्याकरण के स्तर पर भी।

प्रमुख व्याकरणिक विशेषताएँ

(क) कारक व संज्ञा व्यवस्था : पहली बार संस्कृत की अभिव्यक्तियों को हटकर निर्विभक्तिक प्रयोगों का आरम्भ हुआ। इसके साथ-साथ परसर्गों का विकास भी प्रारम्भ हुआ।
आरंभ में 'हिं' परसर्ग सभी कारकों हेतु प्रयुक्त होता था जैसे घरहिं, मणहिं आदि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

धीरे-धीरे कर्ता के साथ 'ने' परसर्ग का विकास भी हुआ।

(ख) क्रिया :- कृदंत क्रियाओं का विकास इसकी प्रमुख विशेषता है जैसे जाणा, खाणा आदि।

- पूर्वकालिक क्रियाओं के लिये पूर्वी हिन्दी के समान 'व' रूप का विकास हुआ जैसे पढाव, बैठाव आदि।

- संयुक्त क्रियाओं के विकास की पूर्वपीठिका दिखाई देती है जैसे- सुनि सकत, उडि चलेई आदि

(ग) लिंग व्यवस्था :- केवल दो लिंग बचे - पुल्लिंग व स्त्रीलिंग। नागरी अपभ्रंश व अंतिम अवस्था की जहाँ नपुसकलिंग विद्यमान था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) वचन व्यवस्था :- संस्कृत के तीन वचनों के बजाय केवल दो वचनों का रह जाना - एकवचन व द्विवचन

(ङ) सर्वनाम व्यवस्था :- हिंदी के कुछ नये सर्वनामों का विकास दिखाई देता है जैसे -
म्हारी, हमार, तोहार आदि।

(च) विशेषण व्यवस्था :- संख्यावाचक विशेषणों का विकास अपभ्रंशकाल में दिखाई पड़ता है जो आज के हिन्दी में दिखाई देते हैं
जैसे - आठ, बारह आदि।

इस प्रकार व्याकरणिक स्तर पर भी अपभ्रंश में कई नये प्रयोग दिखाई पड़ने शुरू हो गये थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) राजस्थानी हिंदी और उसकी बोलियों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आरंभिक अपभ्रंश भाषा जो देश के उत्तरी-पश्चिमी भाग में विकसित हुई, उसी अपभ्रंश से राजस्थानी हिंदी उपभाषा का निर्माण हुआ है। यह उपभाषा भारत में राजस्थान के लगभग संपूर्ण क्षेत्र, मालवा, उज्जैन आदि क्षेत्रों में बोली जाती है। इस उपभाषा की चार बोलियाँ प्रमुख हैं

राजस्थानी हिंदी उपभाषा का क्षेत्र

(क) मारवाड़ी
(ख) जयपुरी या ढूँढाड़ी / ढूढाणी
(ग) मालवी
(घ) मेवाती

(क) मारवाड़ी :- इस बोली का प्रयोग क्षेत्र राजस्थान का मारवाड़ क्षेत्र जिसमें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पश्चिमी व उत्तरी पश्चिमी राजस्थान का क्षेत्र आता है। यहाँ की बोली में पर्याप्त साहित्य रचना भी हुई है सूर्यमल्ल मिश्रण, मुहणोत नैणसी जैसे रचनाकार भी हुए हैं। इस बोली के प्रयोगकर्त्ताओं की संख्या लगभग चार करोड़ है।

विशेषताएँ :-

- 'ट' वर्ग प्रधान भाषा।
- 'न' के स्थान पर 'ण' वर्ण का प्रयोग
  कौन – कौण
- मराठी में प्रयुक्त 'ळ' वर्ण भी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है
  जलना – जळणा
- ओकरांत बहुला भाषा जैसे –
  हुक्को, तारो, ढोलो आदि
- पुल्लिंग/स्त्रीलिंग बहुवचन में आँ प्रत्यय का प्रयोग
  जैसे – बात – बाताँ, रात – राताँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- आनुनासिकीकरण की प्रवृत्ति
जैसे - हाथ - हाँत

प्रमुख सर्वनाम - म्हारो, थारो, कुण आदि

(ख) जयपुरी या ढुंढाणी :- इस बोली का प्रयोक्ता वर्ग जयपुर, दौसा, अजमेर, टोंक, सवाईमाधोपुर आदि जिलों को समाहित करता है। अन्य कई स्तरों पर मारवाड़ी से समानता रखते हुए भी कुछ स्तरों पर भिन्नता विद्यमान है जैसे -

- 'ण' के स्थान पर 'न' वर्ण का प्रयोग
जैसे- मनै, तुनै आदि
- कांई, अंडा (यहाँ) जैसे सर्वनामों का प्रयोग
- 'ब' ध्वनि का कम प्रयोग।

(ग) मालवी :- मालवी बोली के प्रयोक्ता क्षेत्र में दक्षिणी राजस्थान के प्रमुख जिले- चित्तौड़गढ़, कोटा के साथ-साथ मालवा उज्जैन व गुजरात के कुछ हिस्से भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आते हैं -

विशेषता :- शब्द के आदि स्वर का दीर्घीकरण होना। जैसे -

- लकड़ी – लाकड़ी

- प्रमुख अन्य सर्वनाम के (कौन, क्या), कीने आदि

-

(ग) मेवाती :- इस भाषा का क्षेत्र पूर्वी राजस्थान (व) हरियाणा के समीपवर्ती क्षेत्र में विद्यमान 'मेव' जाति के क्षेत्र के अनुरूप है। विशेषताओं में यह जयपुरी के समीपवर्ती है जैसे

- 'ण' वर्ण का कम प्रयोग
- सर्वनाम – का (क्या), वाने (उसने) जैसे आदि।

इस प्रकार राजस्थानी हिन्दी उपभाषा अपनी बोलियों के साथ हिन्दी भाषा क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान व कई अन्यतम विशेषताएँ भी रखती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिंदी की वाक्य-संरचना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दो या दो से अधिक शब्दों के सार्थक संयोजन को वाक्य कहते हैं। हिन्दी में वाक्य निर्माण के लिये वाक्य में तीन विशेषताएँ होनी चाहिए

(क) आकांक्षा :- वाक्यों के अर्थ का संप्रेषणीय होना

(ख) योग्यता :- शब्दों के अर्थों में विरोध का न होना।

(ग) सन्निधि :- वाक्य के शब्दों का देश व काल के हिसाब से पर्याप्त निकटता का होना ताकि अर्थ संप्रेषणीय हो सके।

वाक्यों के प्रकार

(क) सरल वाक्य :- ऐसे वाक्यों में एक ही उद्देश्य एवं एक ही विधेय होता है जैसे -
"राम खेल रहा है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) संयुक्त वाक्य :- समानाधिकरण संबंधों से युक्त वाक्यों के समुच्चयों को संयुक्त वाक्य कहते हैं जैसे -
"राम दिल्ली जायेगा और श्याम जयपुर जायेगा।"

(ग) मिश्रित वाक्य :- व्याधिकरण संबंधों से युक्त वाक्य-समुच्चय को मिश्रित वाक्य कहते हैं जैसे- "राम ने श्याम को बताया कि आज रविवार है।"

अन्य स्तरों पर प्रकार

(क) स्वतंत्र वाक्य :- बिना किसी अन्य वाक्य के अर्थ प्रदान करने वाला वाक्य

(ख) परतंत्र वाक्य :- जो अपने अर्थ हेतु किसी अन्य वाक्य पर निर्भर करे।

- तुम कहाँ रहते हो? (स्वतंत्र वाक्य)
- मथुरा। (परतंत्र वाक्य)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अर्थबोधन की दृष्टि से भी वाक्यों के आठ भेद हैं जैसे - विधेयात्मक, निषेधात्मक, प्रश्नवाचक, संदेहार्थक आदि।

वाक्य क्रम :-

1) हिंदी में वाक्यों में 'कर्ता-कर्म-क्रिया' का क्रम चलता है जबकि अंग्रेजी में कर्ता-क्रिया क्रम का। उदा०
- He eat food
- वह खाना खाता है

2) कारकों का क्रम : संबोधन → कर्ता → ~~संबंध~~ अधिकरण → संबंध → अपादान → संप्रदान → करण - कर्म।

3) क्रिया का विस्तार क्रिया से पहले आता है तो उद्देश्य का विस्तार उद्देश्य से पहले।

4) परसर्गों का प्रयोग संज्ञा से हटकर क्रिया जाता है जबकि सर्वनामों से सटकर।

5) न का प्रयोग निषेधात्मक वाक्यों में क्रिया से पहले होता है जबकि आगत-मूलक वाक्यों में क्रिया के बाद।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'कुमाऊँनी' बोली का संक्षिप्त परिचय दीजिये। 15

~~अ~~ भारत के उत्तरी क्षेत्र में उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश के पास में स्थित अपभ्रंश से ~~कुमा~~ 'पहाड़ी हिन्दी उपभाषा' का विकास हुआ। इस उपभाषा की दो प्रमुख बोलियाँ है - कुमाऊँनी व गढ़वाली। इस उपभाषा में प्रारम्भ में कश्मीरी, चीनी-तिब्बती जैसी अनार्य भाषाओं का प्रभाव रहा है किन्तु समय के साथ इन भाषाओं का प्रभाव ~~इस~~ घटा और आर्य भाषाओं जैसे ब्रज, खड़ी बोली का प्रभाव बढ़ा है।

कुमाऊँनी बोली

क्षेत्र - अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, नैनिताल

इस बोली का प्रयोक्ता वर्ग अत्यन्त छोटा है (लगभग 50 लाख)

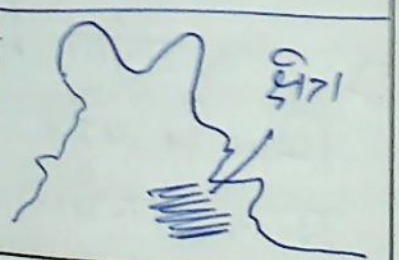

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस बोली में साहित्य की रचना भी न के बराबर ही हुई है।

प्रमुख विशेषताएँ

ध्वनि के स्तर पर

(क) ओकारांत बहुला भाषा - जैसे
घोड़ो, कालो

(ख) बहुवचन (पुल्लिंग) बनाते समय आकारांत शब्दों में 'अन' प्रत्यय का प्रयोग होता है जैसे
घोड़ा - घोड़न

(ग) आनुनासिकीकरण की प्रवृत्ति जैसे-
हाथ - हाँत, पैसा - पैंसा

(घ) अल्पप्राणीकरण के प्रवृत्ति जैसे -
हाथ - हाँत

(ङ) 'ण' जैसी ध्वनियों के प्रयोग में राजस्थानी हिन्दी उपभाषा का प्रभाव

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दिखाई पड़ता है।

व्याकरणिक विशेषताएँ

(क) सर्वनाम - वो, वू आदि

(ख) क्रिया रूप - भविष्य में ल रूप (ब्रज का प्रभाव)

उदा० चलला

(ग) भूतकाल में चल्यौ, खायो आदि 'य' रूप क्रियाएँ

(घ) कारक व्यवस्था

कर्ता - लै

कर्म = कणि

इस प्रकार कुमाऊँनी बोली अपनी विशेषताओं के द्वारा पहाड़ी हिन्दी उपभाषा वर्ग में प्रमुख स्थान रखती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) दिनकर की कृति उर्वशी का प्रतिपाद्य

छायावादोत्तर युग में प्रचलित राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रमुख कवियों में से एक रामधारी सिंह दिनकर ने अपनी प्रसिद्ध कृति उर्वशी में अपनी काम, प्रेम एवं स्त्री-पुरुषों संबंधों संबंधी मान्यताओं का प्रकाशन सहज भाषा में किया है।

फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित इस कृति में पौराणिक पात्र उर्वशी एवं पुरुरवा के प्रेम प्रसंगों का वर्णन है। स्वर्ग की उर्वशी नामक अप्सरा के माध्यम से दिनकर ने काम-वासना की सहजता, प्रेम संबंधों की स्वच्छंदता, यौन-क्रियाओं के प्रति बेबाक भरा दृष्टिकोण रखते हुए पाठकों की कुंठाओं को दूर करने का प्रयास किया है।

यह कृति अपने सौन्दर्य वर्णन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की दृष्टि से भी अद्वितीय है जहाँ दिनकर ने उर्वशी की बाह्य एवं आंतरिक सुंदरता के अत्यन्त मनोहर, सुंदर, मर्मभेदी चित्र खींचे हैं जिसमें स्थूल सौन्दर्यबोध न होकर भावनात्मक स्तर पर स्थापित सूक्ष्म सौन्दर्यबोध का परिचय प्राप्त होता है।

शिल्प के स्तर पर भी दिनकर ने अपनी पारंपरिक ओज भाषा के विपरीत यहाँ माधुर्य गुण से युक्त सहज, चंचल भाषा का प्रयोग किया है। कृति में भाषा में तन्मयता, लाक्षणिकता के साथ सौन्दर्य-वर्णन में बिंबात्मकता, प्रतीकात्मकता एवं सहज उपमानों का प्रयोग अस्वादन की प्रक्रिया को उत्प्रेरित कर देता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भूमंडलीकरण के युग में अर्थात् 1980 के दशक से हिन्दी उपन्यासों की दशा एवं दिशा दोनों में परिवर्तन आया है। कुछ रचनाकारों ने भूमण्डलीकरण से प्रभावित होकर धन-प्राप्ति का प्रयास किया है तो कुछ ने साहित्य का प्रयोग भूमण्डलीकरण के दुष्प्रभावों के सृजनात्मक प्रतिरोध हेतु भी किया है।

भूमण्डलीकरण के फलस्वरूप उपन्यास की प्रमुख धाराएँ :

(क) उत्तर-आधुनिकतावादी उपन्यास धारा :- किसी विचारधारा को न मानकर समस्त परंपरा, मूल्यों को नकारने की प्रवृत्ति इसमें दिखाई देती है जैसे-

मनोहर श्याम जोशी - 'कसप', 'हमजाद' 'मैं कौन हूँ।'

कृष्ण बलदेव वैद - 'विमल उर्फ जाएँ तो जाएँ कहाँ'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) मीडिया व फिल्मों की समस्या से संबंधित
निर्मल वर्मा - 'रात का रिपोर्टर'
पंकज बिष्ट- 'लेकिन दरवाजा'

(ग) सूचना-क्रान्ति के प्रभावों से संबंधित
उपन्यास -
स्वयंप्रकाश - 'ईंधन'
अलका सरावगी - 'एक ब्रेक के बाद'

(घ) वृद्धों की समस्याएँ
काशीनाथ सिंह - 'रेहन पर रग्घु'

(ङ) सांप्रदायिकता :-
गीतांजली श्री - 'हमारा शहर उस बरस'
दूधनाथ सिंह- 'आखिरी कलाम'
कमलेश्वर - 'कितने पाकिस्तान'

(च) नारी विमर्श :- मृदुला गर्ग - 'कठगुलाब'
नासिरा शर्मा - 'शाल्मली'

(छ) दलित विमर्श - मोहनदास नैमिशराय- मुक्तिपर्व

इस प्रकार समस्त विचारधाराओं को समेटते हुए भूमण्डलीकरण के बाद हिन्दी उपन्यासों की दशा एवं दिशा दोनों परिवर्तित हुई है एवं संवेदना-शिल्प का विकास भी हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी गद्य के विकास में बालकृष्ण भट्ट का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतेन्दु युगीन सबसे वरिष्ठ सदस्य बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु युग एवं द्विवेदी युग को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में विख्यात है। विचार-प्रधान निबंधों की परंपरा शुरू करने के कारण इन्हें 'हिन्दी का एडीसन' भी कहा जाता है।

भट्ट जी ने हिन्दी गद्य के योगदान में अपने निबंधों, नाटकों एवं आलोचना के द्वारा योगदान दिया। 'चाकमित्रा', 'आत्मा' जैसे भाव प्रधान निबंधों; 'आँख', 'नाक' जैसे हास्य-व्यंग्यात्मक निबंधों एवं नानक, चंद्रोदय, शंकराचार्य जैसे वर्णनात्मक निबंधों के कारण भट्ट जी ने हिन्दी निबंधों को नई दिशा प्रदान की।

नाटकों के स्तर पर इन्होंने 'चंद्रोदय', 'भाग्योदय', 'बाल-विवाह', 'कालिदास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की सभा जैसे नाटकों के द्वारा नाटक साहित्य को समृद्ध बनाया।

आलोचना के स्तर पर लाला-श्रीनिवास दास के उपन्यास 'संयोगिता स्वयंवर' की पहली आलोचना 'सच्ची समालोचना' के नाम से इन्होंने की।

इसी प्रकार पत्रकारिता के द्वारा इन्होंने 'हिन्दी प्रदीप' पत्र के द्वारा हिन्दी एवं गद्य को जन-सामान्य तक उपलब्ध कराया।

भाषा शैली के स्तर पर संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के समर्थक होने पर भी इन्होंने समस्त भाषाओं के शब्दों को आमंत्रित कर हिन्दी को समृद्ध बनाने का प्रयास किया। उ०।

"यदि हम काशी पत्रिका के समान हिन्दी और उर्दू को एक ही मानें तो हो ही नहीं सकता।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) रामचंद्रिका की संवाद-योजना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

केशवदास के प्रमुख महाकाव्य - रामचन्द्रिका की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी संवाद योजना में निहित है। आचार्य शुक्ल ने कहा है -

"केशव को रामचन्द्रिका में सबसे अधिक सफलता मिली है, इसकी संवाद योजना में xxxx इनका रावण अंगद संवाद तुलसी के रावण - अंगद संवाद से अधिक प्रभावी व बेहतर है।"

केशव की संवाद योजना की सबसे पहली विशेषता इसकी 'गागर में सागर' की प्रवृत्ति का होना है। एक ही वाक्य में राम के वनगमन, दशरथ की मृत्यु व मृत्यु के कारणों का वर्णन निम्न उदाहरण से देखा जा सकता है -

'मातु कहाँ नृपतात? गये सुरलोकहिं
क्यों? सुत शोक लये।'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

संवादों की प्रभावशीलता का दूसरा स्तर वहाँ दिखता है जहाँ वे संवादों में ही दार्शनिक सत्यों का वर्णन अत्यन्त वक्रपूर्ण तरीके से करते हैं। रावण-अंगद संवाद का एक उदाहरण निम्न है-

"राम को काम कहा? रिपु जीतहिं
कौन कबै रिपु जीत्यौ कहाँ?"

फड़कती हुई सजीव भाषा में, मन के भावों का वर्णन करने के साथ-साथ पात्रों के चरित्रों का उद्घाटन भी यदि संवादों के माध्यम से होने लगे तो यह किसी भी संवाद योजना का चरम रूप ही माना जा सकता है। और ये सभी प्रवृत्तियाँ केशव की संवाद योजना को प्रभावी बनाती हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कहानी का रंगमंच

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कहानी का रंगमंच एक नई नाट्य विधा है जिसके अन्तर्गत प्रचलित एवं प्रसिद्ध कहानियों को रंगमंच का विषय बनाया जाता है। इस विधा से निःसंदेह यह अभिप्राय नहीं है कि हिंदी में नाटकों का अभाव है, बल्कि केवल यह कि विभिन्न निर्देशक एवं रंगमंचीय कलाकार नाटकों के स्तर पर नये प्रयोग इसे इसे और विविधपूर्ण एवं विकसित करना चाहते हैं।

'कहानी के रंगमंच' का पहला उदाहरण तब मिलता है जब 'देवेन्द्रराज अंकुर' द्वारा निर्मल वर्मा की तीन कहानियों- 'लंदन की एक रात' एवं अन्य दो का नाटकीय रूपान्तर कर प्रयोग किया।

इस प्रयोग के बाद कहानी के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

रंगमंच पर मोहन राकेश, [illegible] [illegible] एवं प्रेमचन्द की अनेक कहानियों का प्रदर्शन मंच पर किया गया।

कहानी के रंगमंच में कहानी के संपूर्ण पाठ को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करना या कहानी के संवादों को उसी रूप में प्रस्तुत करना नहीं होता बल्कि इन दोनों रूपों के मध्य की कला द्वारा कहानी के मर्म को पाठकों तक पहुँचाना होता है।

रंगमंच के स्तर पर एक पात्र कई भूमिकाएँ भी कर सकता है ताकि कहानी का संप्रेषण उचित रूप में हो सके।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) छायावादी कविता की 'सौंदर्य-चेतना' पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावादी साहित्य (1918-36) अपने काव्य में वैयक्तिकता, स्वातंत्र्य चेतना आदि के साथ जिस उपादान के ~~का~~ कारण महत्ता का अधिकारी है- वह है इसकी सौन्दर्य चेतना। छायावादी कविता में प्रकृति का सौन्दर्य भी है, नारी का भी और हृदय में उठने वाले भावों का भी।

सर्वप्रथम प्रकृति के सौन्दर्य चित्रांकन की बात की जाये तो काव्य में प्रकृति का आगमन तो द्विवेदी युग में ही हो गया था परन्तु जिस आतुरता के साथ सौन्दर्य-वर्णन की आवश्यकता थी, वे आँखे छायावादी कवि के पास ही थी। छायावादी कवि कहता है कि-

"यह प्रकृति परम रमणीय
अखिल ऐश्वर्य भरी --"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

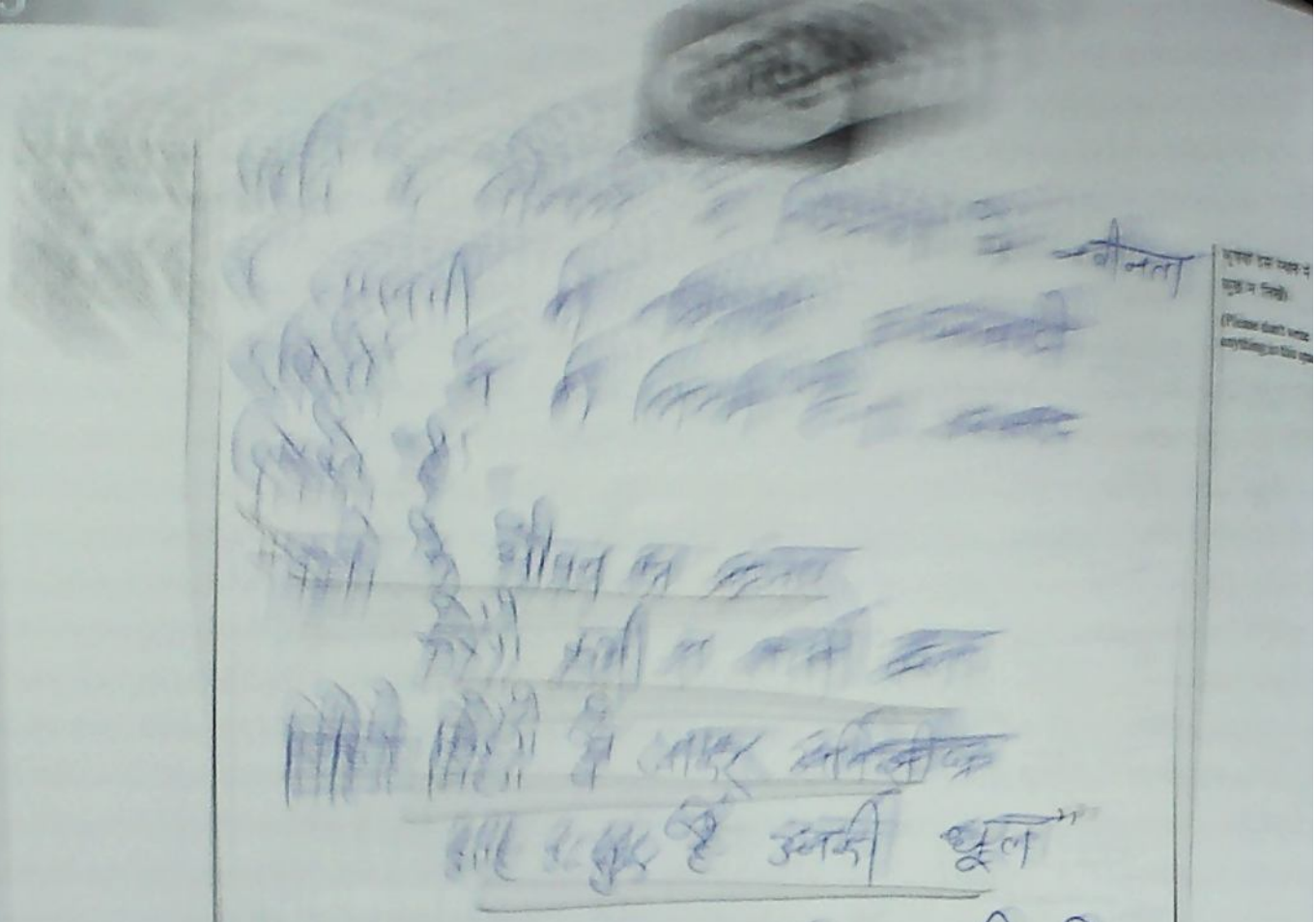

एक अन्य स्थान पर पंत ने प्रकृति के सौन्दर्य को नारी के सौन्दर्य से भी उच्च स्थान दिया है -

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले तेरे बाल जाल में
कैसे उलझा दूँ लोचन।"

एक अन्य सौन्दर्य पक्ष के तहत छायावादी कवियों ने प्रकृति को अपनी सखी, साथी के रूप में वर्णन कर उसका

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मानवीकरण भी किया है। निराला लिखते हैं-

"मेघमय आसमान से उतर रही है,
संध्या सुंदरी परी सी,
धीरे धीरे धीरे ---"

- सौन्दर्य वर्णन का दूसरा क्षेत्र छायावादी काव्य में नारी सौन्दर्य वर्णन का है। छायावादी कवियों ने रीतिकालीन कवियों की भाँति सौन्दर्य के स्थूल एवं भोगवादी मानसिकता युक्त चित्र न खींचकर आंतरिक एवं सूक्ष्म चित्र खींचे हैं। प्रसाद ने कामायनी में श्रद्धा के सौन्दर्य का वर्णन निम्न पंक्ति में किया है-

"हृदय की अनुकृति बाह्य उदार
एक लंबी काया उन्मुक्त।"

इसी प्रकार नारी के सौन्दर्य को नग्नता में न बताकर गूढ़ता में बताने की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छाया छायावादी कवि भी रखते हैं-

"तुम कनक किरण के अंतराल में
लुक छिपकर चलते हो क्यों?
है लाज भरे सौन्दर्य बता दो।
मौन बने रहते हो क्यो?"

इसी प्रकार छायावादी कवि नारी के सौन्दर्य को भोगमूलक न मानकर प्लेटोनिक प्रेम दृष्टि से प्रभावित होकर अध्यात्मिक स्तर तक ऊँचा उठा देते हैं -

"तुम्हारे छूने में था प्राण
संग में पावन गंगा स्नान।"

इस प्रकार अपनी सूक्ष्म सौन्दर्य बोध, भावनात्मक गहराई के कारण छायावादी कवियों का सौन्दर्य बोध हिन्दी साहित्य में अद्वितीय स्थान रखता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की आंचलिक उपन्यासधारा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

आंचलिक उपन्यासों की धारा हिन्दी साहित्य की एक विशिष्ट धारा है जिसमें किसी छोटे से क्षेत्र या अंचल को उपन्यास कथा का क्षेत्र बनाकर अपनी विचारधारा से तटस्थ रहते हुए उस अंचल के संपूर्ण क्षेत्र को अपनी पूर्णता में उपन्यास में चित्रित किया जाता है — चाहे वह भौगोलिक क्षेत्र हो, राजनीतिक हो, सामाजिक हो या अन्य कोई स्तर।

पश्चिम के '<u>मारिया एजवर्थ</u>', '<u>फॉकनर</u>' एवं '<u>टॉमस हार्डी</u>' ने जो कमाल वहाँ की उपन्यासधारा में ~~स्थापि~~ किया, वही कमाल फणीश्वरनाथ रेणु ने अपने आंचलिक उपन्यास '<u>मैला आँचल</u>' के द्वारा हिन्दी उपन्यासधारा में किया है।

<u>आंचलिक उपन्यासों की प्रमुख विशेषताएँ</u> :

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(क) अंचल का नायकत्व: आंचलिक उपन्यास में कोई पात्र कथा का नायक नहीं होता बल्कि किसी भी पात्र से अधिक महत्व रखते हुए अंचल ही नायकत्व का अधिकारी बनता है। मैला आँचल में भी कालीचरण, बावनदास या डॉ० प्रशान्त के बजाय "मेरीगंज" ही है जो नायकत्व का अधिकारी है।

(ख) विचारधारा की तटस्थता: आंचलिक उपन्यासकार अपनी विचारधारा से तटस्थ रहकर अंचल के हर पक्ष का वर्णन करता है उदाहरण के लिये मैला आँचल में रेणु समाजवादी होते हुए भी समाजवादी पार्टी की विसंगतियों को उजागर करते हैं।

(ग) भौगोलिक वर्णनों की बाढ़:- इस उपन्यास को पढ़ने का अनुभव उस अंचल में बस जाने का होता है ग्रामीण संगीत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गीत आदि का वर्णन वातावरण को सघन बनाता है। उदा०
"डिम डिमिक डिमिक
गिड़ गिड़ गिड़धा, गिड़धा गिड़धा।"

(घ) अंचल की भाषा :- किसी भी अंचल की भाषा अपने शुद्ध रूप में पाठक के सम्मुख उपस्थित होती है। उदा०- मैला आँचल -
"तंत्रिमा टोली में धमाधम पंचायत हो रही है"
बैसचरमन (वाइसचेयरमैन) फारम (फॉर्म) जैसे अंग्रेजी के विकृत रूप।

(ङ) अंचल के हर पक्ष का संपूर्ण वर्णन करनी भी इसकी प्रमुख विशेषता है।

प्रमुख आंचलिक उपन्यास
फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल, परती परिकथा
नागार्जुन - बलचनमा, रतिनाथ की चाची
राही मासूम रजा - आधा गाँव
उदय शंकर भट्ट - सागर लहरें व मनुष्य आदि।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मौलिकता की दृष्टि से केशवदास के काव्यकर्म का परीक्षण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मध्ययुग में हिन्दी साहित्य के रीतिकाल में रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रमुख कवि 'केशवदास' का योगदान अपने प्रमुख ग्रन्थों - नखशिख, विज्ञान - दर्शन, जहाँगीर जसचन्द्रिका, रस - विलास, नखशिख आदि के द्वारा दिया गया है।

केशव के साहित्य की मौलिकता पर विचार करें तो हमें कुछ कमियाँ देखने को मिलती है। आधुनिक काल के प्रमुख रसवादी आलोचक 'डॉ० नगेन्द्र' के अनुसार - 'अलंकार और रस सिद्धान्त केशव का काव्यकर्म न तो मौलिक है, न ही प्रथम।"

इसी प्रकार प्रबंधात्मकता, कार्य - कारण संबंधों की हीनता के आरोप एवं कठिन - काव्य संबंधी आलोचना शुक्ल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जी द्वारा भी की गई है।

परन्तु यदि सूक्ष्म अवलोकन करें तो केशव का काव्य मौलिकता से रहित नहीं है-

(क) केशव के काव्य में छंदो के प्रकार एवं उनका वैविध्य हिन्दी साहित्य में दुर्लभ है। अज्ञेय ने केशव के छंद वैविध्य की प्रशंसा करते हुए उसे अद्वितीय बताया है।

(ख) केशव की संवाद योजना भी अपने आप में मौलिकता का ही उदाहरण है। 'गागर में सागर' को प्रदर्शित करती यह योजना हिन्दी साहित्य के इतिहास में सबसे बेहतरीन मानी जाती है।

(ग) ये केशव ही थे जिन्होंने आचार्य भामह, रुद्रट आदि के ग्रन्थों का अनुवाद कर अलंकार के विभिन्न वर्गों में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भेद स्पष्ट किया। अन्योक्ति का प्रथम उदाहरण केशव के ग्रन्थों में ही मिलता है।

(घ) भक्ति की नवरसमयी कल्पना केशव के काव्य की ही देन मानी जाती है।

(ङ) इसके अतिरिक्त लक्षणा के भेदों, रूपक जैसे अलंकारों एवं शृंगार रस के भेदों (प्रबंध व प्रकाश) के सन्दर्भ में विवरण केशव की मौलिकता की ही बानगी पेश करता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि अनेक स्तरों पर कठिनाई, अलंकार को साध्य मानना, बुद्धि प्रेरित वक्रता आदि आरोपों के होते हुए भी केशवदास के अनेक संकल्पनाओं में पर्याप्त मौलिकता का परिचय मिलता है जो उन्हें 'आचार्यत्व' का अधिकारी सिद्ध भी करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation